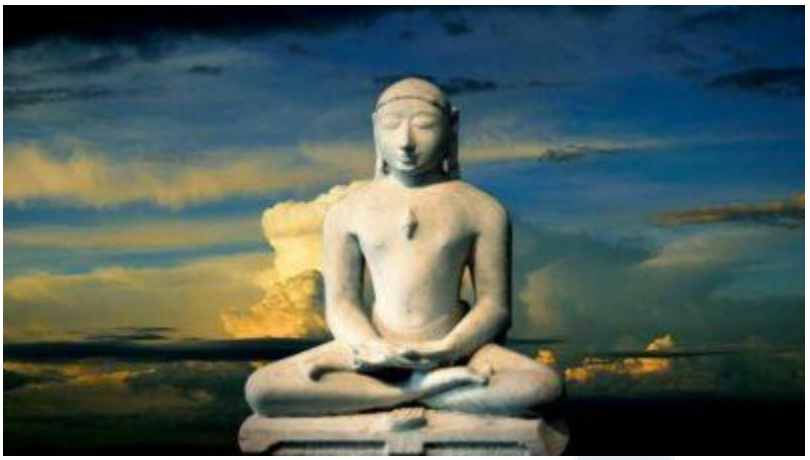

सुपार्श्वनाथ चालीसा

लोक शिखर के वासी हैं प्रभु,
तीर्थंकर सुपार्श्व जिननाथ।
नयन द्वार को खोल खड़े हैं,
आओ! विराजो! हे जगनाथा॥

सुन्दर नगर वाराणसी स्थित।
राज्य करें राजा सप्रतिष्ठित॥

पृथ्वीसेना उनकी रानी।
देखें स्वप्न सोलह अभिरामी॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

तीर्थंकर सुत गर्भ में आए।
सुरगण आकर मोद मनायें॥

शुक्ला ज्येष्ठ द्वादशी शुभ दिन।
जन्मे अहमिन्द्र योग में श्रीजिन॥

जन्मोत्सव की खुशी असीमित।
पुरी वाराणसी हुई सुशोभित॥

बढ़े सुपार्श्वजिन चन्द्र समान।
मुख पर बसे मन्द मुस्कान॥

समय प्रवाह रहा गतिशील।
कन्याएँ परणाई सुशील॥

लोक प्रिय शासन कहलाता।
पर दुष्टों का दिल दहलाता॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

नित प्रति सुन्दर भोग भोगते।
फिर भी कर्मबन्ध नहीं होते॥

तन्मय नहीं होते भोगों में।
दृष्टि रहे अन्तर-योगों में॥

एक दिन हुआ प्रबल वैराग्य।
राजपाट छोड़ा मोह त्याग॥

दृढ़ निश्चय किया तप करने का।
करें देव अनुमोदन प्रभु का॥

राजपाट निज सुत को देकर।
गए सहेतुक वन में जिनवर॥

ध्यान में लीन हुए तपधारी।
तपकल्याणक करें सुर भारी॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

हुए एकाग्र श्री भगवान।
तभी हुआ मनःपर्यय ज्ञान॥

शुद्धाहार लिया जिनवर ने।
सोमखेट भूपति के गृह में॥

वन में जा कर हुए ध्यानस्थ।
नौ वर्षों तक रहे छद्मस्थ॥

दो दिन का उपवास धार कर।
तर शिरीष तल बैठे जा कर॥

स्थिर हुए पर रहे सक्रिया।
कर्मशत्रु चतुः किये निष्क्रिया॥

क्षपक श्रेणी में हुए आरूढ़।
ज्ञान केवली पाया गूढ़॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

सुरपति ने ज्ञानोत्सव कीना।
धनपति ने समोशरण रचीना॥

विराजे अधर सुपार्श्वस्वामी।
दिव्यध्वनि खिरती अभिरामी॥

यदि चाहो अक्षय सुखपाना।
कर्माश्रव तज संवर करना॥

अविपाक निर्जरा को करके।
शिवसुख पाओ उद्यम करके॥

चतुः दर्शन-ज्ञान अष्ट बतायें।
तेरह विधि चारित्र सुनायें॥

बाह्माभ्यन्तर तप की महिमा।
तप से ही मिलती गुण गरिमा॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

सब देशों में हुआ विहार।
भव्यों को किया भव से पार॥

एक महीना उम्र रही जब।
शैल सम्मेद पे, किया उग्र तप॥

फाल्गुन शुक्ल सप्तमी आई।
मुक्ति महल पहुँचे जिनराई॥

निर्वाणोत्सव को सुर आये।
कूट प्रभास की महिमा गाये॥

'स्वास्तिक' चिन्ह सहित जिनराज।
पार करें भव सिन्धु-जहाज॥

जो भी प्रभु का ध्यान लगाते।
उनके सब संकट कट जाते॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

चालीसा सुपार्श्व स्वामी का।
मान हरे क्रोधी कामी का॥

जिनमन्दिर में जाकर पढ़ना।
प्रभु का मन से नाम सुमरना॥

'अरुणा' को है दृढ़ विश्वास।
पूरण होवे सबकी आस॥

जाप – ॐ ह्रीं अर्हं सुपार्श्वनाथाय नमः

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य जैन चालीसा

आदिनाथ चालीसा

अजितनाथ चालीसा

संभवनाथ चालीसा

अभिनंदननाथ चालीसा

सुमतिनाथ चालीसा

पद्मप्रभु चालीसा

सुपार्श्वनाथ चालीसा

चंद्रप्रभु चालीसा

पुष्पदंत चालीसा

शीतलनाथ चालीसा

श्रेयांसनाथ चालीसा

वासुपूज्य चालीसा

विमलनाथ चालीसा

अनंतनाथ चालीसा

धर्मनाथ चालीसा

शांतिनाथ चालीसा

कुंथुनाथ चालीसा

अरहनाथ चालीसा

मल्लिनाथ चालीसा

मुनि सुव्रतनाथ चालीसा

नमिनाथ चालीसा

नेमिनाथ चालीसा

पार्श्वनाथ चालीसा

महावीर चालीसा